



तत् त्वं पूषन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# KENDRIYA VIDYALAYA JUNAGADH AHMEDABAD REGION

B/h Adarsh Nivasi Shala, Bilkha Road, Junagadh

SESSION-2023-24

## E-MAG'NE 'अभिमन्'

SEPTEMBER 2023





तत् त्वं पूषन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

## OUR PATRONS



**SMT. SHRUTI BHARGAVA**  
**DEPUTY COMMISSIONER**  
**KVS RO (AHMEDABAD)**

**SMT. VINITA SHARMA**  
**ASSISTANT COMMISSIONER**  
**KVS RO (AHMEDABAD)**

**SMT. MEENA JOSHI**  
**ASSISTANT COMMISSIONER**  
**KVS RO (AHMEDABAD)**

**SH. VENKATESH PRASAD**  
**ASSISTANT COMMISSIONER**  
**KVS RO (AHMEDABAD)**

**SH. ANIL RANAVASIYA, IAS**  
**COLLECTOR & DM**  
**JUNAGADH**  
**CHARIMAN, VMC**

**SH. PAWAN KUMAR SUTHAR**  
**PRINCIPAL**  
**K V JUNAGADH**





## From the Principal's Desk

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का मूल उद्देश्य होता है। सम्पूर्ण विद्यालय परिवार के लिए यह गौरव का विषय है कि आज हम विद्यालय की समाचार पत्रिका को आभासी रूप से प्रस्तुत करने जा रहे हैं। यह ई-समाचार पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि “विपरीत परिस्थितियाँ जीवन को और बेहतर बनाती हैं तथा हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं।” शिक्षा जगत् में हमारे नौनिहाल प्रतिभा-शक्ति को बेहतर से बेहतर बनाने में लगे हैं, जिसका सफल उदाहरण इस आभासी समाचार पत्रिका को कहा जा सकता है।

यह पत्रिका इस बात की साक्षी है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों यदि व्यक्ति कठिन परिश्रम और लगन के साथ आगे बढ़ने की पहल करता है तो सफलता स्वयं उसके कदम चूमती है। इसी बात को हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों ने इस पत्रिका में चरितार्थ कर दिखाया है। पत्रिका की सम्पूर्ण विषयवस्तु यह सिद्ध करती है कि शिक्षक-विद्यार्थी और अभिभावकों ने मिलकर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक वातावरण निर्मित किया है और हमें यह पूर्ण विश्वास है कि यह आभासी उपहार विद्यालय की गरिमा बढ़ाने में महत्ती भूमिका निभाएगा। आभासी पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री विद्यार्थियों के ज्ञान-अवबोध-उपयोग-रुचि एवं कौशल की परिचायक है।

मैं सम्पूर्ण विद्यालय परिवार, अभिभावकों और विशेष रूप से विद्यार्थियों को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस आभासी समाचार पत्रिका को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गर्व महसूस कर रहा हूँ।

श्री पवन कुमार सुथार  
प्राचार्य  
केन्द्रीय विद्यालय जूनागढ़



तत् त्वं पश्यन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन



## From the Editor's pen

We are sincerely privileged to pronounce the publication of E-mag'ne 'अभिमन्', the first issue of the Digital Magazine of Kendriya Vidyalaya Junagadh for September 2023. The magazine wishes to serve as archives for showcasing and cherishing the celebrations and achievements of our vidyalaya.

Watching our children grow through the visual & performing arts, not only just participating but also excelling in various curricular and co-curricular activities and competitions gives us a great pleasure. And this is the illustrious reflection of their passion to move ahead by managing through academic studies. This keeps fuelling our children with wonders of creativity. Enthusiasm could be the internal voice that whispers, "I can do it"

We wish to express our heartfelt gratitude to our zealous Principal sir for his ingenious inputs to traverse us in attaining a grand success.

A distinct acclamation to all the teachers and students for exhibiting their enduring energy and indomitable passion to portray.

Ashwin Makwana

PGT English

KV Junagadh





# हिन्दी पखवाड़ा





# हिन्दी पखवाड़ा

**G20** भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्  
One Earth One Family One Future

— प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी —

“नई सोच  
नया विकास  
जी-20  
मित्रकर करेगा  
प्रयास”

विद्या जातिवत्  
10-8 (सर्वांगी)  
महापुत्रा रघुन



**स्टार बैग**

विशेषताएँ:-  
उचित मूल्यों में उपलब्ध।  
बैस्ट क्वालिटी से बना।  
उपे 6 चैन उपलब्ध प्रति बैग में।  
छोटे बच्चे से लेकर बड़े लोगों के लिए उपलब्ध।  
बैग का कवर साथ मिलेगा।  
600 से लेकर 20 हजार तक के बैग।

“शुंदर”  
“सस्ता”  
“टिकव”

पता:- मुख्य बाजार, दिल्ली  
फोन नं.:- 9261XXXXXX

रंग - बिगो डिजाईनों में उपलब्ध  
2 लैने पर 30% ऑफ



जल संकट के प्रति जागरूकता

जल संरक्षण

जल का लो मुझे  
उत्तमोत्तम उपयोग करे।

जल संकट के प्रति जागरूकता

जल संरक्षण

जल का लो मुझे  
उत्तमोत्तम उपयोग करे।

जल संकट के प्रति जागरूकता

जल संरक्षण

जल का लो मुझे  
उत्तमोत्तम उपयोग करे।

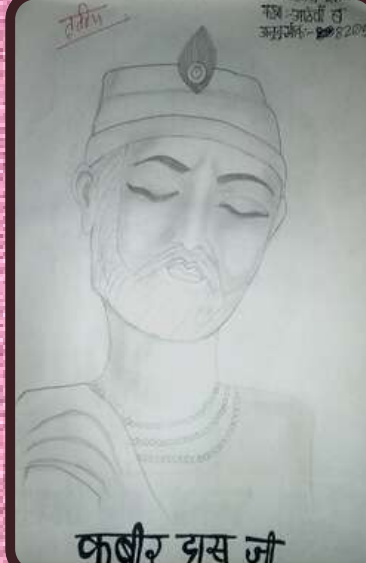
प्रथम - जया -  
नाटवाली

नाम: जिया  
कक्षा: आठवीं क  
अनुक्रमांक: 8228



तृतीय - कबीर दास जी

नाम: कबीर दास जी  
कक्षा: 8-अ  
अनुक्रमांक: 8228



द्वितीय - रामधारी सिंह 'दिनकर'

नाम: वैशिका राणा  
कक्षा: 8-अ  
अनुक्रमांक: 8116





**कितना भी दूँ गहूँरा दाम  
चमक कर दूँगा बेदाम**

- कपड़ों की मटकाई
- कपड़ों की चमकाई
- कम दाम, ज्यादा काम
- डक धुलाई, कड़ी सफाई
- कपड़ों की मुलायम रखें

2 चमक पाऊंडर  
खरीदने पर 1  
साबुन फ्री

1 Kg मात्र  
50 रूपए

हर किशोरी की दुकान पर उपलब्ध  
फोन नंबर : 829631XXXX



**आजकल के बच्चों  
की पसंद  
प्रिन्स पेन्स**

- शानदार ग्रिप
- स्पाफ लिम्बावट
- सुन्दर लिखावट
- आकर्षक डिजाइन
- तीक्ष्ण, चाली, काते बंग में
- पोंच पेन पर 1 गुण
- अब लिखते बड़े  
बिना कंके

केवल  
₹5/पेन

संपर्क : 012XX01111  
ईमेल : Prince0001@gmail.com

शाला : प्रिन्स कार. बीकानेर  
कक्षा : 10<sup>th</sup> A जीमा बस



**शैशवी मैमक्ती**

शैशवी जन्म  
अथैरा ब्रह्मर्षी

विशेषताएँ :

1. सभी रंगों में उपलब्ध।
2. सभी प्रकार की साइजों में उपलब्ध।
3. अच्छी क्वालिटी की गैस का प्रयोग।
4. इसकी शैशवी बहुत बुर तक जाती है।
5. यह मौमक्ती लंबे समय तक चली है।
6. सबसे अधिक बचारी जाने वाली मौमक्ती।

आइए ही अपनी नजदीकी दुकानों में  
जाएँ और जानकारी के लिए  
संपर्क करें - 10129XXXX0

सहा धमाका  
ऑफर

प्रत्येक पैकेट के  
आधे एक माचिस  
की डिस्का त्रा!





## उच्च प्राथमिक कक्षाओं में गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु (हिन्दी व्याकरण के विशेष सम्बन्ध में)

हिंदी भाषा के उद्भव और विकास पर दृष्टिपात न करके हम आज उन छोटी-छोटी बातों पर नज़र डालते हैं; जिन्हें हम भाषा अध्यापन के कर्तव्य का निर्वहण करते समय अक्सर नजरअंदाज़ कर देते हैं। मेरे कहने का मतलब है हिंदी पढ़ते या पढ़ाते वक्त हम उन पर ध्यान नहीं देते या फिर खुद या सामने वाले को यह कहकर टाल देते हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यह तो वर्तमान में चल पड़ा है। जी हाँ! मैं बात कर रहा हूँ, हिन्दी के उच्चारण या उसके लेखन में आ रही अशुद्धियों की। जहाँ तक मैंने अनुभूत किया है; मेरे अध्यापन काल के दौरान, मैंने यह देखा कि विद्यार्थियों को हिंदी पढ़नी तो आती है; लेकिन उनके उच्चारण में तथा लेखन में व्याकरणिक अशुद्धियों की भरमार रहती है। ऐसा क्यों है? इसका कारण क्या है? क्या इसका कारण वह विद्यार्थी स्वयं है या फिर वह है जो उसको पढ़ा रहा है या फिर पढ़ा चुका है। बड़ी निराशा होती है जब वर्तमान में एक छठी, सातवीं या फिर आठवीं कक्षा का विद्यार्थी हिंदी पढ़ते समय कई प्रकार की, उच्चारण से सम्बंधित अशुद्धियाँ करता है।

आज विश्व में लाखों भाषाएँ हैं, शायद इससे अधिक हों; लेकिन हिन्दी भाषा की एक विशेषता जो इसे सबसे मानक (STANDARD) बनाती है वो है- 'हिन्दी में जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है तथा जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है।' अब यदि ऐसा है तो ऊपर लिखी गई बातों में कहीं न कहीं हमारी स्वयं की चूक हो सकती है। हमारी हिन्दी तथा उसकी स्वर्णिम लिपि नागरी अर्थात् देवनागरी में इन गलतियों की गुंजाइश बिलकुल न के बराबर है, बशर्ते हमें इसके नियमों की सही जानकारी हो तथा अध्यापन के दौरान हम थोड़ा सा सजग रहें। इसके लिए मैं समझता हूँ हमारे प्राथमिक शिक्षकों की जिम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है। कारण भी स्पष्ट है कि भाषा का 'ककहरा' इसी दौरान सीखा जाता है। बच्चा इस समय जैसा सीखता है, आगे उसके सीखने में (विशेष रूप से उच्चारण में) उसका विशेष योगदान रहता है। इसके लिए जरूरी नहीं कि हम उसको बोझिल तरीके से (सम्पूर्ण व्याकरण का ज्ञान दें) सिखाएँ। सरल से सरल, छोटे-छोटे उदाहरण देकर भी उसमें परिष्कार लाया जा सकता है।

बात यदि उच्च प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी उच्चारण में गुणवत्ता की, की जाए तो मेरा निजी अनुभव कहता है कि इसमें काफी सुधार की आवश्यकता है और इसे काफी हद तक सुधारा जा सकता है। जब तक बच्चा भाषा का सही ढंग से (व्याकरणिक नियमानुसार) पठन-पाठन नहीं कर पाएगा, चाहे वह हिन्दी हो या फिर आँग्ल भाषा, अन्य भाषाओं में निपुणता कैसे प्राप्त कर सकता है। इस नाते भाषा शिक्षक का कर्तव्य और अधिक बढ़ जाता है कि वह विद्यार्थियों को भाषा के नियमों का सरलीकरण करके उसके श्रवण, वाचन, पठन और लेखन आदि कौशलों का विकास करे। इसके लिए हमें (जहाँ तक मेरा अनुभव कहता है) कुछ समय पाठ्यक्रमीय सामग्री से इतर निकालना पड़ेगा। उदाहरण के लिए – यदि आप किसी कक्षा में जाएँगे और कहेंगे कि 'बच्चो! आज हम हिन्दी वर्णमाला सीखेंगे।' शायद बच्चों की पहली प्रतिक्रिया होगी – 'सर/मेडम! वो तो हमने सीख रखी है, अब किसलिए सीखें?' बात उनकी भी सही है। जब हमसे वो पहले ही सीख चुके हैं तो दुबारा सीखने की क्या आवश्यकता है। अब यदि उनमें से बारी-बारी से कुछ बच्चों को श्यामपट्ट पर या फिर सभी को उनकी कक्षा-कार्य की पुस्तिका में वर्णमाला लिखने के लिए कहा जाए तो मैं आपको यकीन के साथ कह सकता हूँ कि बहुधा बच्चे गलत या अशुद्ध लिखेंगे और यदि उच्चारण के लिए कह दिया जाए तो ना जाने आपके सामने कितनी ही अशुद्धियाँ आन पड़े (बशर्ते आपको स्वयं व्याकरण के नियमों का अधिकाधिक ज्ञान हो)।

एक छोटा सा उदाहरण लेते हैं- आप अपनी कक्षा के सभी बच्चों को यदि पूछें कि बच्चो! बताओ 'क्षत्रीय' शब्द हिन्दी शब्द कोष में कहाँ मिलेगा? शायद एक समवेत स्वर में (कुछ को छोड़कर, यह संख्या नगण्य भी हो सकती है) आपको जवाब मिलेगा – 'शब्द कोष के अंत में।' आप आज ही जाकर अपनी कक्षा में इसको अपनाकर देख सकते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि बच्चों को यदि प्रारम्भ में ही इस प्रकार का व्याकरणिक ज्ञान दे दिया जाता तो शायद आपके सामने उच्च प्राथमिक या फिर मैं समझता हूँ उच्च माध्यमिक तक में ऐसी स्थिति न के बराबर होती। इसी प्रकार आप 'ज्ञानी' शब्द के बारे में पूछ लीजिए। 'त्रिशूल' शब्द के बारे में पूछ लीजिए। बात यह है कि हमने बचपन में उसे 'क्ष' से 'क्षत्रीय', 'त्र' से 'त्रिशूल' और 'ज्ञ' से 'ज्ञानी' तो सिखा दिया; परन्तु यह नहीं सिखाया कि इन वर्णों को हिंदी में कहते क्या हैं?

समग्रतया यह कहा जा सकता है कि हमें बच्चों को हिन्दी पढ़ाने से पूर्व उसकी लिपि तथा उसके मानक रूप से अवश्य अवगत करा देना चाहिए। यह काम, जरूरी नहीं है कि प्राथमिक स्तर पर ही किया जाए, वरन उच्च कक्षाओं में भी किया जा सकता है।

जयप्रकाश

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)

केन्द्रीय विद्यालय जूनागढ़





## THE GOLDEN RULE

CHARACTERS:

MAYA: A KIND AND HELPFUL GIRL

ALEX: A SELFISH AND RUDE BOY

NARRATOR: A NARRATOR WHO GUIDES THE AUDIENCE THROUGH THE STORY

SETTING: A PARK ON A SUNNY DAY

NARRATOR: ONCE UPON A TIME, THERE WERE TWO CHILDREN NAMED MAYA AND ALEX. MAYA WAS A KIND AND HELPFUL GIRL, WHILE ALEX WAS A SELFISH AND RUDE BOY.

MAYA: (SITTING ON A BENCH, READING A BOOK)

ALEX: (RUNNING UP TO MAYA, SNATCHING THE BOOK OUT OF HER HANDS)

HEY! I WANT TO READ THAT BOOK!

MAYA: (SURPRISED) BUT I'M READING IT RIGHT NOW.

ALEX: SO WHAT? I WANT IT NOW. GIVE IT TO ME!

MAYA: (HESITANTLY) FINE.

ALEX: (RUNNING OFF WITH THE BOOK, LAUGHING)

MAYA: (SIGHING) THAT'S ALEX FOR YOU. HE'S ALWAYS SO SELFISH.

NARRATOR: MAYA WAS DISAPPOINTED, BUT SHE WASN'T ANGRY. SHE KNEW THAT ALEX WAS JUST BEING HIMSELF. SHE DECIDED TO GO FOR A WALK TO CLEAR HER HEAD.

MAYA: (WALKING THROUGH THE PARK, ENJOYING THE SUNSHINE)

ALEX: (RUNNING UP TO MAYA AGAIN) HEY, MAYA! I'M BORED. PLAY WITH ME!

MAYA: (SMILING) OKAY. WHAT DO YOU WANT TO PLAY?

ALEX: I DON'T KNOW. YOU DECIDE.

MAYA: LET'S PLAY TAG.

ALEX: NO. I DON'T WANT TO PLAY TAG.

MAYA: HOW ABOUT HIDE-AND-SEEK?

ALEX: NO. I DON'T WANT TO PLAY HIDE-AND-SEEK.

MAYA: THEN WHAT DO YOU WANT TO PLAY?

MAYA: (SIGHING) FINE. LET'S PLAY FOLLOW THE LEADER.

MAYA: (LEADING ALEX AROUND THE PARK)

ALEX: (FOLLOWING MAYA, GETTING BORED QUICKLY) THIS IS BORING. I DON'T WANT TO PLAY FOLLOW THE LEADER ANYMORE.



MAYA: OKAY. WHAT DO YOU WANT TO PLAY NOW?

ALEX: I DON'T KNOW. I JUST DON'T WANT TO PLAY WITH YOU ANYMORE.

ALEX: (RUNNING OFF, LEAVING MAYA ALONE)

MAYA: (SITTING DOWN ON A BENCH, FEELING SAD) I DON'T UNDERSTAND. WHY IS ALEX SO MEAN TO ME?

[AFTER ALEX LEFT, SOME BOY CAME IN GARDEN AND STARTED. BULLING ALEX AND THAT TOOK HIS NECKLACE, WHICH BELONGS TO HIS MOTHER WHO WAS DEAD FOUR YEARS AGO. THEY THREW IT IN LAKE AND WALK AWAY. ALEX STARTS CRYING BECAUSE HE DOESN'T HOW TO SWIM.]

(MAYA WAS LOOKING EVERYTHING)

MAYA: (TALKING TO HERSELF) I WILL NOT HELP HIM. HE HAD ALWAYS BEEN RUDE AND MEAN TO ME.

(AFTER A MOMENT SHE REMEMBER THAT HER MOTHER HAD TOLD HER THAT: "ALWAYS TREAT OTHERS THE WAY YOU WANT TO BE TREATED.")

[MAYAWALKS TOWARDS LAKE AND BRINGS BACK THE NECKLACE OF ALEX.]

MAYA: HERE, YOUR NECKLACE.

(ALEX WHO DIDN'T HAVE ANY HOPE THAT MAYS WILL HELP HIM BECAUSE HE HAD ALWAYS BEEN RUDE TO HER.

ALEX:(LOCKING DOWN REGRETLY) I AM REALLY SORRY THAT I HAD ALWAYS BEEN SO RUDE AND HU TO YOU, PLEASE FORGIVE ME FOR MY BAD BEHAVIOUR.AND THANK YOU SO MUCH FOR BRINGING MY NECKLACE BACK.

MAYA: I AM HAPPY THAT YOU REALISE YOURFAULT. SO, DO YOU WANNA BE FRIENDS?

ALEX: (LOOKING UP AT MAYA, SMILING) YEAH. I'D LIKE THAT.

MAYA: (SMILING BACK) GREAT!

NARRATOR: MAYA AND ALEX BECAME BEST FRIENDS THAT DAY. THEY LEARNED THAT IT'S ALWAYS BEST TO TREAT OTHERS THE WAY YOU WANT TO BE TREATED.

MORAL OF THE STORY:

THE GOLDEN RULE IS A MORAL THAT TEACHES US TO TREAT OTHERS THE WAY WE WANT TO BE TREATED. IT'S AN IMPORTANT RULE TO LIVE BY BECAUSE IT HELPS US TO CREATE A KINDER AND MORE COMPASSIONATE WORLD.

WRITTEN BY:

PRAGATI CHAVDA, KENDRIYA VIDYALAYA JUNAGADH



## The Rain

As the serene drops hit the ground  
I rejoice in the Petrichor,  
As well as every drop's sound.



I look at the scene in peace  
And enjoy the ambience,  
As I care not of my surroundings.



I wonder what the pitter-patters mean  
While each drop comes down faster,  
And the trees sway with the breeze.

The dark clouds loom over the location,  
Yet the people are not filled with gloom,  
But with mesmerisation.

Although in the rain, I love dancing,  
I'd rather stay by a window and read a book,  
As getting sick, I don't fancy



Written by-  
Thapasya Srivalli Rayavarapu, VIII-A  
Kendriya Vidyalaya Junagadh



## **Soldier staring at the Night Sky**

In the dark night the stars are all aligned  
So beautiful it might make me go blind.

Now the moon is up high,  
It gives the night sky a brightening light.

Felt like peace, the thing that I sought,  
Forgetting everything for which I fought.

The stars were all sparkling  
It gave me a wonderful feeling.

On the edge of the sky was the Polestar,  
Felt like it wasn't that far.

"I want to stay her forever  
But only if I could get myself together."

Said the soldier staring at the night sky  
Letting tears out of his eyes.

Waving a bye to the stars  
All while looking harmed.

Written By-

Likitha Naidu Rayavarapu, VI

Kendriya Vidyalaya Junadgadh





## PRINCESS OF KALLISTAR

a Short Story

“Where are we heading, Sir Ryuu?” She questioned with a hopeful glint in her tear-stained Hazel eyes. It had been a few hours of travelling in mysterious silence that had to be broken by no other than Valerie, The Princess of Kallistar. She has been a Rebel ever since her legs started to run. Many young girls in her Kingdom look up to her with hopes of becoming female warriors.

“Ah, Princess! Glad you’ve asked! I decided to leave you be since I was afraid to bring up your father’s death and distress you.” He grinned nervously while waving a hand in the air.

“Oh...yes...I’m quite all right now.” She tried to smile but instead ended up frowning. Could we blame her? It was her dear father -who took care of her and trained her to become a bold warrior- that had died. She cannot forgive those dragons!

--(A few hours ago)--

The Kingdom of Kallistar had never been at war as extreme as the one in the present. They fought against traitorous other Kingdoms; however, this war was uncalled for...

It was only another joyful day, with youngsters running along the rocky roads of the Kingdom with their tiny feet, while one of them got out of the track, and fled to the forest wishing to catch the tiny butterfly-like spark that whispered, “Catch me...”

The kid’s joyous grin had faltered once the spark disappeared and the ground started rumbling. His wobbly legs fell to the ground as he sat there with tears running down his cheek.

Just then, the ground in front of him started to crack. The slight cracks instantly transformed into broader ones that streamed to a faraway hill and glinted a fiery orange glow, from which came hundreds of winged creatures.

After all the dragons were set free, the broad cracks thinned into their previous form and streamed to the top of the hill, where the light was glowing.

The dragons ravaged the Kingdom, grabbing anyone in sight, and mercilessly eating them. The screams of most of the citizens died down slowly, indicating that most of them had been eaten. The little boy had also been caught by one of the dragons and lost his life.

The people in the castle shivered at the shrieks and roars of the beasts. Her father called for Valerie and assigned her a muscular gentleman with sapphire eyes, and ginger hair.

He told her that Sir Ryuu would explain everything to her and pointed at the man with a scroll in his hand. He kissed her on the forehead and pushed them into an entrance that led to the other end of the castle.

He handed her the scroll that he had been holding. She opened it up and read the disintegrating words. It was a manual about dragons. She had read a similar one in her youth. Back when people made up folk tales about dragons, will-o-wisps, and miracles.

She used to believe them and fantasised about petting a real dragon back then, but soon grew out of it and focused on being a warrior that people looked up to. However, dragons turned out to be real, and they aren’t friendly like the tales had told. In fact, they are quite the opposite.



She shook her thoughts and read the scroll. It seemed as if it had a solution for making the dragons disappear. The only sentence of the scroll that was visible, was written in dark letters and said The place of elevation is where the blaze burns. Offer it w... The rest of the letters in the sentence disintegrated.

"The place of elevation," She realised that was where they were heading and pointed to the hill in front of them saying, "is Avonburn! That's where the blaze is coming from! But offer it what?"

She glanced at Ryuu, and he seemed to be staring back at her. When he noticed that she was looking at him for an answer, he slightly opened his mouth and pointed at the underside of the scroll. She turned it around and noticed the brooch of a tiny figure of something on the paper.

She furrowed her eyebrows, put a hand under her chin, and stared at the brooch. And when the realisation hit, her eyes widened and her mouth went agape. It was a heart-shaped brooch.

He frowned and took away the scroll from her. He rolled the scroll close, and stated "We will need the heart of a dragon, Princess," He put a hand on her shoulder with an amiable look on his face and pointed out, "...and I reckon your soul is brave enough to get one."

She stared at him with a determined look and nodded. "I will avenge my Kingdom! Even if it means death!" She exclaimed.

--(Time Skip)--

As they got up the hill, the growls of the dragons were reduced to the sound of blowing wind. Their journey was quiet since Valerie was preparing to fight, while Ryuu suspiciously glared at every tree or rock they passed by.

All of a sudden, the sound of blowing wind was replaced by the audible flapping of wings. Valerie got into a protective and sturdy position, while Ryuu looked around cautiously.

From above the large pine trees came the terrifying body of a dragon. Its roar damaged her ears, but she stood her ground with determination in her eyes.

With a swift blow of wind, the hazel creature lunged at Valerie. "Valerie, watch out!" Yelled Ryuu in the midst of running towards her to push her away.

Valerie stood her ground and swiftly swung her sword above her head with a grunt and pierced the dragon's chest. It let out a terrifying roar of pain before losing its balance and falling to the side, immediately destroying the trees in its path.

Valerie walked up to it and grazed her hand on its scaled wings resulting in a low growl from the dragon. It eventually inhaled its last breath. Valerie was awestruck. She had never seen a giant mysterious beast laying helplessly in front of her.

Ryuu's swift breathing died down once he saw her unharmed. He regained his composure and





She didn't need to be told twice and she immediately twirled around. The sound of squelching made her flinch. After a few minutes of the sickening sound of squelching, Ryuu tapped her shoulder lightly and said, "We must continue the journey, Princess."

She looked back at him and nodded her head. She noticed that he placed the heart in a sack that he had been carrying. She put out her hand expecting him to put the crimson-stained sword in her hand, and with a hesitant look, he passed it to her.

She placed the bloody sword on her scabbard and started walking deeper into the forest with Ryuu by her side. As they walked through the luscious forest, the blaze burned even brighter, indicating that they were close to their destination.

--(Time Skip)--

Ryuu tried to start a conversation with her, however, her reply was always a single word. She couldn't talk to anyone after killing the dragon, as her mind was rotating around her dead father. 'What can I do? What could I have done? If I had been by his side and hadn't put up a childish tantrum, maybe I could've saved him.'

Her thoughts were cut by Ryuu. "We've arrived." He said in a deep tone. His face was facing downward as he grabbed the sack on his waist and started pacing towards the cracky spherical opening in the centre of the area which lay a little far away from the place they were standing at.

Valerie slightly furrowed her eyebrows. She noticed the tension in the air as Ryuu's dark aura, his tight grip on the sack, and the way his eyes were glued to the ground –almost as if glaring at it– made it obvious.

She wasn't sure what made his previously amiable demeanour change into an intimidating one, hence she decided to question, "Is everything all right, Sir Ryuu?" She pursed her lips into a thin line when he whipped his head toward her and transformed his frown into a lopsided grin.

"Oh! I was only recalling something from the sacred scroll." He frowned, "Could you maybe pass it to me, for I have a bad memory?" He motioned to the scroll that had been wrapped in her waistband. She hesitantly grabbed the paper with disintegrating letters and walked up to him.

He held out a hand as her eyes flickered over to the opening and onto his eyes that were glaring into her soul. She dropped the scroll into his hands with a gulp, as a drop of sweat trickled down her forehead. She knew something wasn't right. The tension in the air was suffocating.

"It says here, we need to sacrifice something." His crimson eyes deepened his glare on her, as her breath hitched, but she stood strong and glared back. "More precisely, the heart of a dragon..." He muttered as his gaze dropped onto the pit in front of them.

"All right. Let us not delay, Sir Ryuu." She gained her composure while Ryuu slowly grabbed the heart from his sack. She glanced at him and swore his eyes shone a dark scarlet. That's when the thought snapped --The scroll never mentioned the sacrifice of a dragon heart as he read.

He crushed the heart in his hand with a scowl as his soulless eyes stared at her, and before she could react, the opening released a bolt of lightning that flashed in front of her, making her stumble behind while the light blinded her eyes.

When the light dispersed, she made eye contact with a spine-chilling sapphire dragon that wore an undercoat of crimson on its wings that began with a razor-sharp claw. It had a lengthy tail from which pierced out sharp glass-like spikes similar to the ones on its back that extended from its head. Its head elongated into massive horns at the top. Its overall appearance was stinging, although it was nothing when compared to its crimson eyes that were piercing into her soul.



She gripped her sword and her shield with the other hand and lunged at Ryuu's dragon form. He avoided her offence by fleeing upwards and making his way toward her back. He roared as he struck her back.

She avoided it by crouching, however, his claw penetrated her left arm making her grunt. He flew upwards, and charged at her, much like a fierce hawk. Right before his claw could pierce her back, she blocked off the attack with her shield.

Both of them were pushed away from the astonishingly strong force of the shield. After a few times of offence and defence, Valerie stood her ground with determination, although she dreaded that her anxiety would take over and make her lose. 'Has he been that horrifying creature the whole journey? Why would he try to save me from the other dragon, if he could've ended me back at the castle? He wants something from me.'

However, she was in shock when she noticed it was of no use. The sword that was expected to end him was no use. She pulled it away from his muscle when he only growled, and caught her with his huge palm. The moment he did, he started flying toward the sky.

She wanted to use the sword to cut his palm and make a slight gap to get out of his grip. She cut the side of his inner palm with a grunt and gripped onto it, as she hung for dear life. Ryuu's eyes trailed her form crawling onto his limb. He huffed --almost like a scoff-- and flew higher.

Her eyes started to water and sting from the cold contact of air, but she tightly gripped his limb as if her life depended on it --which it did. Her leg slipped at one time, and her arm the other, but without fear, she crawled up to his back while everything spun around hearts were pushed away by his roar. He was zooming towards her, and she reciprocated his actions, as both pounced at each other while their screams filled the air. She ducked underneath him when Ryuu tried to grab her head. She took the opportunity to stab his chest and the moment Valerie's sword came in contact with his skin, she hastily punctured it deeper.

Valerie realised that her sword wasn't fit for piercing his heart. It was now hard to believe that any sword could, considering the fact that hers was made of the strongest metal known to mankind. Hence, she decided to use one of his weapons against him.

When she successfully climbed up his back, she positioned her sword on the side of one of his huge sharp glass-like structures and with an audible grunt, pushed it onto the crystal. That had no effect on it. The sword cut it midway, however, the stroke only left cracks on the midway-torn crystal.

Valerie stared at her broken sword nonchalantly for a moment, before placing what was left of it in her scabbard. She wrapped her hands around the half-broken crystal and pulled it with great pressure.

Blood was streaming down her shaky hands, and she screamed painfully as the cracks on its surface cut open her skin with the pressure. Tears trickled down her eyes when the huge crystal alas broke apart from his back, which was noticed by an unfazed Ryuu.

Her pain was pushed away by her strong will to save the citizens of her Kingdom no matter the cost, and she would be more than willing to put her life in danger to end the bloodshed against her dear people.

She crawled to his neck with the crystal that was coated with blood in her hand, while Ryuu swung his head back and forth to make her fall off. However, his efforts ended when she jumped down to hold his limb.

Ryuu tried to swing her off, but she used the movement to get closer to his previously stabbed chest. He noticed it and immediately brought his limb over to his face. His crimson eyes glared at her menacingly and she took that opportunity to stab him in the eye.



He roared in pain before pulling away. She instantly climbed up his limb while Ryu started to fly back down making the ride even more tilted. Her grip was loose on him which only made her slip worse. She could see the trees and the blaze closer in view, indicating that they were getting close to the ground.

If she had to initiate her strategy, she needed to act quickly. She made her way to the area where his back and wing connected, and with a yell, "For Kallistar!" stabbed the edge of the wing where it connected to the rest of his body with the crystal in hand. The moment the crystal penetrated his wing, she made it rip through half his wing.

With an intense roar, Ryu lost his balance and unwillingly headed straight to the blaze. Valerie hurriedly glanced around her, and a tree caught her eyes. With a huff of air, she leaped onto it. Ryu tried to catch her mid-air, but his claw only grazed her hair while he sped into the blaze.

She watched him fall into the pit of the blaze with a deafeningly eerie cry as his eyes darted at her, sending chills down her spine. She let out a breath of relief once he fell inside, disappearing without a trace. She used the branches for her benefit and climbed down the tree, making her way to the blaze.

Her breath hitched when she saw a bolt of thunder strike above the opening. She stumbled back when a blue wisp hovered above the opening. "Do not be frightened, young one, as I come in peace." Its soothing voice spoke, "I am here to congratulate you on your victory against Ryu."

"H-How do you know him?" She stuttered. "And I have many questions unanswered!" The wisp nodded after hearing her exclamation. "Why did dragons invade us? Who is Ryu, and why has he travelled with me? What had he wanted to gain from killing me?"

The wisp sighed, "This might be much to take in, hence I will put it in a way you can understand. Think of Ryu as the King of your rival Kingdom. His interest caught yours and he was envious of your people ruling the great lands of your world. Hence, he conflicted against your Kingdom with his soldiers by his side. This portal can be used to travel from one Kingdom to another, however, it also has the power to perish one. Ryu's strategy was to use your heart --The Princess of Kallistar's-- to perish your people, however, your strong will has won against him, in turn perishing his. As you received this, you have gained the power to rule Ryu's world."

A gorgeous gold tiara elegantly decorated with a blinding red ruby in the centre floated in the air before Valerie. She gently grabbed it and was stunned by its beauty but remembered her dead people. "But, my people have died, and I do not have a place or reason to live." She mumbled, as the wisp placed the tiara on Valerie's head and whispered something inaudible.

The wisp only smiled, "Do not discourage yourself, dear, as magic exists where you could not expect." With that said, the wisp pointed to the tiara with its tiny arm and disappeared into thin air, like the portal, leaving her awestruck.

Valerie removed her tiara and held it in her hands. A tear slid down her face as she remembered the intimate people that were by her side throughout her life. Her father who had a deadly belief in folklore, her maid who had been her mother figure, the knights who encouraged her, never minding that she was a woman, and all the people of her Kingdom that looked up to her. They were gone.

A drop of tear fell onto the ruby, and she slowly grazed her finger on it. The ruby shone a light yellow before a portal appeared out of thin air, making Valerie take a step back. It was nothing like the previous pit of the blaze. It was up-right and spherical --perfect for a person to fit it. It wasn't emitting light either.

It was transparent. However, it displayed a gorgeous grassland with flowers on a sunny day. The complete opposite of the place she had been standing at. She hesitantly stepped into the portal. The refreshing breeze of a spring day hit her face and made her raven hair blow.





She breathed in the scent of the flowers before looking around. There was a massive castle that was visible, far from the place she had been standing at. There were also many small huts located at different places in the meadow where people were looking around surprisedly.

Valerie glanced at a slightly grey-haired woman in torn rags who was staring at her, and it looked like the woman was about to cry. She immediately ran to Valerie and embraced her in a hug. Valerie was stunned. She didn't know what to do with an old lady hugging her.

Valerie shifted uncomfortably in her position. The elder woman pulled away from the hug and rubbed the tears from her cheek with a smile. Valerie examined her face and tears started to well up in her eyes as she recognized the old lady. "Mother..?" She questioned.

"Valerie! Oh, how much I've missed you!" Valerie didn't know how to react to her mother after seventeen years of her missing. She was delighted, absolutely, but confused and concerned as to why she was found in Ryuu's world.

"I too, mother!" It was her turn to hug her mother. After she pulled away, she had a concerned look on her face as she tried to calm herself because of the thousands of questions in her head. Her furrowed eyebrows relaxed when her mother placed a hand on her shoulder.

"I understand, dear..." She sighed, "You are reasonable to have been confused. I wholeheartedly apologise for leaving you at such a young age. I had my reasons, and most of them were to keep you secure. If you've managed to come here, I believe you've met the wisp." Valerie nodded.

"When you were five, Ryuu had made an arrangement with me. He needed our land, and our architecture and if we hadn't agreed, he would've killed you. As the ruler of Kallistar, I couldn't agree to lose our land, and as a mother, I also couldn't lose my daughter. Hence, I proposed an offer to him which wouldn't end in sacrificing Kallistar or You."

"The offer was to use some of our people to build his world to his expectations. He agreed to leave us once we completed his task. However, he said that he wasn't satisfied, and locked us up here as slaves. Your father didn't know about this. I told him that I was leaving for something important and that he needed to train you to come for me if I never came back...And he succeeded, Valerie." She said as she grabbed the tiara and placed it on Valerie's head.

"I...I don't think I could rule a Kingdom, mother." She removed the tiara and lightly placed it on her mother's head. "Father...passed away...and we need you to stay as our Queen!"

The older woman let a drop of happy tears slip through and chuckled before grabbing Valerie's hand and leading her to the group of people that were heading towards them. They instantly recognized Valerie and embraced her in a group hug. She couldn't help, but smile. She decided not to dwell on her past, but remember it.

~The End~

Written by-  
Thapasya Srivalli Rayavarapu VIII-A  
Kendriya Vidyalaya Junagadh

## SWACHHATA PAKHWADA





# TEACHERS' DAY CELEBRATION





# CELEBRATING THE INDEPENDENCE DAY



## Rajya Puraskar Certificates for Scouts





## Scouts & Guides Testing Camp 2022-23







## CO-CURRICULAR ACTIVITIES

**EK BHARAT SHRESHTHA BHARAT  
&  
AZADI KA AMRIT MAHOTSAV & Kala Utsav**





## CO-CURRICULAR ACTIVITIES

### EK BHARAT SHRESHTHA BHARAT & Kala Mahotsav

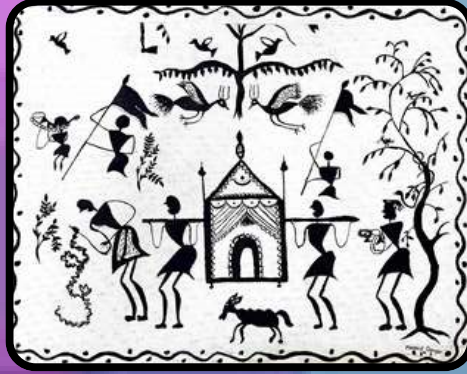




# Various activities organised under EK BHARAT SHRESHTHA BHARAT & AZADI KA AMRIT MAHOTSAV







## RASHTRIYA EKTA PARV 2023 PROJECTS





# YOGA COMPETITION



# YOGA COMPETITION





# INVESTITURE CEREMONY





# INVESTITURE CEREMONY



EDITED & DESIGNED BY

Ashwin Makwana  
PGT English, KV Junagadh



Kendriya Vidyalaya  
Behind Adarsh Niwasi Shala, Bilkha road,  
Junagadh